# "शिक्षा के लोकव्यापीकरण की दृष्टि से चित्रकूट की स्थानीय प्राथमिक शालाओं का अध्ययन"

* ओमप्रकाश तिवारी
** डॉ0 सरोज गुप्ता

**प्रस्तावना :**

बच्चों के निर्माण की प्रक्रिया प्राथमिक स्तर से ही प्रारम्भ हो जाती है दिसम्बर 1993 में सर्वाधिक आबादी वाले, सबसे कम साक्षरता वाले देशों का एक शिखर सम्मेलन दिल्ली में हुआ था। इस सम्मेलन में "दिल्ली घोषणा पत्र" तैयार किया गया था । जिसमें यह संकल्प दोहराया गया था कि सभी को सम्पूर्ण साक्षर बनाकर सबके लिए शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त कर लिया जायेगा। नवीन शिक्षा नीति में 14 वर्ष तक की आयु के बालक–बालिकाओं को औपचारिक एवं गैर औपचारिक शिक्षा साधनों से अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने के संकल्प को दोहराया गया है तथा यह आशा व्यक्त की गयी कि इस लक्ष्य को पूर्ण करने का पूर्ण प्रयास किया जायेगा।

भारतीय संविधान की 45वीं धारा के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष के समस्त बच्चों को प्रारम्भिक 10 वर्ष के अन्दर अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया था। जिस आधार पर शिक्षा का लोक–व्यापीकरण हो जाना था । परन्तु आज तक शिक्षा के लोकव्यापीकरण का लक्ष्य पूर्ण नहीं हो सका है ।

आधुनिक भारत में जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में विकास हुआ है, परन्तु हमारे परम्परागत विचारों में विकास नहीं हुआ । फिर भी वर्तमान में हमारी सरकार शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु कृत संकल्प है।

वास्तव में शिक्षा जन्म से मृत्युपर्यन्त चलने वाली सहज प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की ज्ञानात्मक तथा कौशलात्मक क्षमताओं का सहज विकास होता है।

आज मानव जीवन की समस्त आधुनिक प्रक्रियाएं लिखित कागजों

* शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, म.गां.चि.ग्रा.वि. चित्रकूट (म0 प्र0)।
** एसोसिएट प्रोफेसर, म.गां.चि.ग्रा.वि. चित्रकूट (म0 प्र0)।

से चलती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति का साक्षर होना आवश्यक हो गया है। जिससे वह शोषण के विभिन्न प्रपंचों से स्वयं की रक्षा कर मुक्त जीवन जी सके तभी आज के युग की अपेक्षाओं के अनुरूप आगे बढ़ सकता है। साथ ही समाज की प्रगति में सहभागी हो सकता है। महात्मा गांधी ने भी कहा था – "शिक्षा का उद्देश्य है अहिंसक एवं शोषण रहित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की स्थापना।'' अतः समाज के प्रत्येक वर्ग को समुचित अक्षर ज्ञान द्वारा शिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है।

नवीन शिक्षा नीति में 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालक–बालिकाओं को गैर औपचारिक शिक्षा साधनों से अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का संकल्प दोहराया गया है।

प्राथमिक शिक्षा के लोक–व्यापीकरण का अर्थ है – हर बालक और बालिका यथा संभव और अधिक से अधिक 14 वर्ष की आयु तक कम से कम पांच वर्ष की प्राथमिक शिक्षा या औपचारिकता के माध्यम से उसके समतुल्य शिक्षा प्राप्त करें और निर्धारित शैक्षिक स्तर भी अर्जित करें ।

**प्राथमिक शिक्षा के लिए लोक–व्यापीकरण के उद्देश्य :**

- 6 से 14 वर्ष तक के आयु के समस्त जन समुदाय को गुणवत्ता पूर्वक सार्थक ज्ञान देना। जिससे उनमें जीवनोन्मुखी कौशल का विकास हो सके ।
- सामाजिक सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन हो सके। राष्ट्रीय एकता एवं संप्रभुता को बल मिल सके ।
- संवेदनशील मानवीय समाज का निर्माण हो सके ।

**अध्ययन विधि :**

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के आधार पर प्राथमिक शालाओं का अध्ययन किया गया ।

**क्षेत्र का परिसीमन :**

क्षेत्र के परिसीमन के लिए प्राथमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण प्रपत्र के आधार पर अध्ययन किया गया गया।

**न्यादर्श का निर्धारण :**

प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के अध्ययन के लिए यादृच्छीकरण विधि के आधार पर न्यादर्श के लिए पांच शासकीय तथा पांच अशासकीय विद्यालयों को सर्वेक्षण हेतु चयनित किया गया –

**अ. पांच शासकीय विद्यालयों की सूची :**

शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, कामता चित्रकूट
शासकीय बालक प्राथमिक विद्यालय, कामता चित्रकूट
शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, नयागांव, चित्रकूट
शासकीय पूर्व प्राथमिक शाला, लोधन, टिकुरा, चित्रकूट
शासकीय हाईस्कूल, पालदेव, चित्रकूट

**ब. पांच अशासकीय विद्यालयों की सूची :**

विद्याधाम पूर्व माध्यमिक विद्यालय, जानकीकुण्ड, चित्रकूट
महन्त शत्रुघ्नदास विद्या मन्दिर, केशवगढ़, चित्रकूट
महन्त सत्यनारायणदास हाईस्कूल, सन्तोषी अखाड़ा, चित्रकूट
श्री वेदान्ती पूर्व माध्यमिक विद्यालय, नयागांव, चित्रकूट
महात्मागांधी पूर्व माध्यमिक विद्यालय, प्रमोदवन, चित्रकूट

**वर्गीकरण एवं सारणीयन :**

उपर्युक्त दस विद्यालयों के सर्वेक्षण प्रपत्र के आधार –

**सारणी संख्या – 1 (अ)**

**शासकीय प्राथमिक शालाओं के पंजीकृत छात्रों का विवरण**

| क्रं. | विद्यालय का नाम | पंजीकृत छात्रों की संख्या | | | जाति वर्ग | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | छात्र | छात्राएं | कुल संख्या | सामान्य | ओ.बी.सी. | एस.सी. |
| 1 | शासकीय कन्य पूर्व माध्यमिक विद्यालय कामता चित्रकूट | – | 242 | 242 | 78 | 91 | 64 |
| 2 | शासकीय बालक प्राथमिक कामता चित्रकूट | 120 | 160 | 120 | 47 | 31 | 4 |
| 3 | शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय नयागांव चित्रकूट | 176 | 56 | 336 | 49 | 88 | 199 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | शासकीय पूर्व प्राथमिक शाला लोधन टिकुरा चित्रकूट | 37 | 126 | 93 | 04 | 89 | – |
| 5 | शासकीय हाईस्कूल पालदेव चित्रकूट | 106 | – | 232 | 58 | 103 | 69 |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि पांच शासकीय विद्यालयों में पंजीकृत छात्रों की संख्या में विभिन्नता कहीं कम एवं कहीं ज्यादा है केवल एक विद्यालय में पंजीकृत छात्रों की संख्या न्यून है क्योंकि यह विद्यालय एकान्त गांव में है वहां की आबादी भी कम है। छात्रों के विभिन्न जाति वर्ग को भी देखा गया जिसमें अलग–अलग वर्ग के छात्रों की संख्या अलग सभी विद्यालयों में है। केवल एक शासकीय प्राथमिक शाला, लोधन टिकुरा में विद्यालय में जहां छात्र संख्या कम है वहां एस.सी. एवं एस. टी. के छात्र नहीं है।

**सारणी संख्या – 1 (ब)**
**अशासकीय प्राथमिक शालाओं के पंजीकृत छात्रों का विवरण**

| क्रं. | विद्यालय का नाम | पंजीकृत छात्रों की संख्या | | | जाति वर्ग | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | छात्र | छात्राएं | कुल संख्या | सामान्य | ओ.बी.सी. | एस.सी. |
| 1 | विद्याधाम पूर्व माध्यमिक विद्यालय जानकीकुण्ड चित्रकूट | – | – | 844 | – | – | – |
| 2 | महन्त शत्रुघ्नदास विद्यामन्दिर केशवगढ़ चित्रकूट | 75 | 35 | 110 | 45 | 15 | 10 |
| 3 | महन्त सत्यनारायणदास हाईस्कूल सन्तोशी अखाड़ा चित्रकूट | 752 | 281 | 1033 | 652 | 110 | 09 |
| 4 | श्री वेदान्ती पूर्व माध्यमिक विद्यालय नयागांव चित्रकूट | 52 | 29 | 81 | 37 | 11 | – |
| 5 | महात्मागांधी पूर्व माध्यमिक विद्यालय प्रमोदवन चित्रकूट | 64 | 40 | 104 | 28 | 34 | – |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि अशासकीय प्राथमिक शाला के पंजीकृत छात्रों की संख्या शासकीय विद्यालयों के पंजीकृत छात्रों की संख्या से अधिक है सबसे अधिक छात्रों की संख्या महन्त सत्यनारायण हाईस्कूल सन्तोषी अखांड़ा चित्रकूट विद्यालय में है। यह विद्यालय घनी बस्ती में भी है।

एक विद्यालय में विद्याधाम पूर्व माध्यमिक विद्यालय में एक साथ छात्रों की संख्या प्राप्त हुई है। अलग छात्रों की संख्या नहीं प्राप्त हो सकी है। शासकीय विद्यालयों की तरह अशासकीय विद्यालयों में भी एस0 सी0 एस0 टी0 के छात्र हैं ।

**सारणी संख्या – 2 (अ)**
**शासकीय प्राथमिक शालाओं के छात्रों से संबंधित गतिविधियों का विवरण**

| छात्रों को प्राप्त होने वाली छात्रवृत्ति | सरकार द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन | छात्रों की समस्याएं | पाठ्य की सहगामी क्रियाएं |
|---|---|---|---|
| • छात्रवृत्ति एस0 सी0 एस0 टी0 के छात्र–छात्राओं को ।<br>• परीक्षा प्रोत्साहन<br>• परीक्षा परिणाम के आधार पर प्रवीणता छात्रवृत्ति | • मध्यान्ह भोजन<br>• निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें<br>• गणवेश<br>• शिक्षण परीक्षा आदि शुल्क से मुक्त<br>• छात्रों को निःशुल्क साइकिल वितरण | • अभिभावकों द्वारा पर्याप्त सहयोग न मिलना ।<br>• बौद्धिक स्तर के आधार पर पाठ्यक्रम न होना<br>• आर्थिक संकट<br>• शिक्षकों द्वारा पर्याप्त सहयोग न मिलना । | • बालसभा का आयोजन ।<br>• राष्ट्रीय पर्व का आयोजन ।<br>• वार्षिक उत्सव का आयोजन।<br>• सफाई अभियान का आयोजन।<br>• निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन<br>• अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन ।<br>• प्रश्न मंच संबंधी प्रतियोगिता का आयोजन ।<br>• खेलकूद, स्काउटिंग का आयोजन<br>• वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन । |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों से संबंधित गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। छात्रों को छात्रवृत्ति भी दी जाती है सरकार की ओर से छात्रों को प्रोत्साहन भी प्राप्त होते हैं। मध्यान्ह भोजन की भी व्यवस्था है। सभी व्यवस्थाओं के होते हुए भी छात्रों की कुछ समस्याएं भी हैं, जैसे शिक्षकों द्वारा पर्याप्त सहयोग न मिलना, आर्थिक संकट, पाठ्यक्रम बौद्धिक स्तर का न होना। अभिभावकों का पूर्ण सहयोग न मिलना।

सारणी संख्या – 2 (ब)

अशासकीय प्राथमिक शालाओं के छात्रों सें संबंधित गतिविधियों का विवरण

| छात्रों को प्राप्त होने वाली छात्रवृत्ति | सरकार द्वारा प्राप्त प्रोत्साहन | छात्रों की समस्याएं | पाठ्य की सहगामी क्रियाएं |
|---|---|---|---|
| • कोई छात्रवृत्ति नहीं | • कोई प्रोत्साहन नहीं | • गणवेश की समस्या<br>• आवागमन की समस्या<br>• छात्रों के पाठ्य पुस्तकों की समस्या<br>• मध्यान्ह भोजन की समस्या | • बालसभा का आयोजन ।<br>• राष्ट्रीय पर्व का आयोजन ।<br>• वार्षिक उत्सव का आयोजन।<br>• श्रमदान<br>• निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन<br>• अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन ।<br>• प्रश्न मंच प्रतियोगिता<br>• वाद–विवाद प्रतियोगिता<br>• खेलकूद, स्काउटिंग, गाइडिंग कबड्डी । |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालयों में छात्रों को शासकीय विद्यालयों की तरह न तो कोई छात्रवृत्ति प्राप्त होती है न सरकार द्वारा प्रोत्साहन ही प्राप्त है। यद्यपि शासकीय विद्यालयों की तरह अशासकीय विद्यालयों में भी छात्रों से संबंधित सभी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। अशासकीय विद्यालयों में भी शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तरह यहां भी छात्रों की कुछ समस्याएं हैं जैसे गणवेश की समस्या, आवागमन की समस्या, पाठ्यपुस्तकों की समस्या मध्यान्ह् भोजन की समस्या।

सारणी संख्या – 3
शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों की
शैक्षिक योग्यता संबंधी विवरण

| शैक्षिक योग्यता | शासकीय | | अशासकीय | |
|---|---|---|---|---|
| | महिला | पुरूष | महिला | पुरूश |
| प्रशिक्षित स्नातक | 01 | 01 | 05 | 17 |
| अप्रशिक्षित स्नातक | 01 | 03 | 09 | 10 |
| प्रशिक्षित परास्नातक | 02 | 03 | 02 | 04 |
| अप्रशिक्षित परास्नातक | – | 03 | – | 02 |

## विश्लेषण :

सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताओं को सर्वेक्षण के आधार पर देखा गया जिसमें शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षक कम हैं जिसमें महिलाओं की संख्या न्यून है। जबकि प्रशिक्षित पुरूषों की संख्या अधिक है परन्तु अशासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित महिला पुरूष दोनों है यद्यपि कि प्रशिक्षित महिलाओं की संख्या कम है ।

सारणी संख्या – 4 (अ)
शासकीय प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों से संबंधित गतिविधियों का विवरण

| कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त शिक्षकों के दायित्व | शिक्षक अभिभावक बैठक | शिक्षकों के वर्ष में होने वाले प्रशिक्षण | शिक्षकों की समस्याएं |
|---|---|---|---|
| • अनुशासन संबंधी दायित्व<br>• स्वास्थ्य संबंधी दायित्व<br>• मध्यान्ह भोजन आयोजन<br>• सफाई संबंधी कार्य करवाना<br>• सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण<br>• परीक्षाओं का आयोजन | • प्रतिमाह बैठक<br>• आकस्मिक बैठक<br>• छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने हेतु बैठक | • सेवाकालीन प्रशिक्षण<br>• गतिविधि आधारित प्रशिक्षण<br>• शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु प्रशिक्षण<br>• सीखना–सिखाना हेतु प्रशिक्षण<br>• दक्षता आधारित प्रशिक्षण<br>• ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण | • शिक्षणेत्तर कार्यो के कारण शिक्षण कार्य के लिए पर्याप्त समय न मिल पाना<br>• शिक्षकों के सम्मान की कमी ।<br>• वरिष्ठ अधिकारियो द्वारा उचित निर्देशों का अभाव<br>• प्रतिवर्ष पाठ्यक्रमों का बदलना |

| | | | |
|---|---|---|---|
| • सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन<br>• शासन को समय–समय पर चाही गयी जानकारी देना<br>• जनगणना में सहयोग चुनाव संबंधी जानकारी | | | |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों को शिक्षण के अतिरिक्त और भी बहुत से दायित्व है। शिक्षक अभिभावक बैठक भी विद्यालय में होती है। इसके अतिरिक्त शिक्षक समय–समय पर विशेष प्रकार के प्रशिक्षण भी लेते हैं। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षकों के अतिरिक्त दायित्व के कारण शिक्षकों को अपने शिक्षण कार्य में कठिनाइयां भी उठानी पड़ती है।

**सारणी संख्या – 4 (ब)**
**अशासकीय प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों से संबंधित गतिविधियों का विवरण**

| कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त शिक्षकों के दायित्व | शिक्षक अभिभावक बैठक | शिक्षकों के वर्ष में होने वाले प्रशिक्षण | शिक्षकों की समस्याएं |
|---|---|---|---|
| • प्रार्थना संबंधी व्यवस्था<br>• छात्रों से समाचार प्रस्तुत करवाने की व्यवस्था<br>• जी0 के0 प्रश्न की तैयारी करवाना<br>• बोधवाक्य लिखने में सहयोग करना<br>• कक्षा की व्यवस्था<br>• कार्यालयीन कार्य में सहयोग देना<br>• परीक्षा संबंधी कार्य में सहयोग देना | • वर्ष में तीन बार बैठक<br>• आकस्मिक बैठक | • व्यक्तिगत विकास प्रशिक्षण<br>• स्काउट रेडक्रास प्रशिक्षण | • न्यून वेतन के कारण आर्थिक समस्या |

**विश्लेषण :**

सारणी से स्पष्ट है कि अशासकीय विद्यालयों में भी शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की भांति शिक्षण के अतिरिक्त अन्य दायित्वों का निर्वहन करना पड़ता है। अशासकीय विद्यालयों में भी शिक्षक–अभिभावक बैठक होती है। अशासकीय विद्यालयों में भी शिक्षकों को शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्य भी करने पड़ते हैं परन्तु न्यून वेतन मिलने के कारण उनकी आर्थिक समस्या बनी रहती है। जबकि शासकीय विद्यालयों में वेतन की समस्या न होकर अन्य उत्तरदायित्व अधिक होते हैं ।

**परिणाम एवं निष्कर्ष :**

- शासकीय विद्यालयों में छात्रों को अध्ययन में रूचि पैदा करने के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गयी है।
- शासकीय विद्यालयों में शिक्षा के प्रति अभिरूचि पैदा करने एवं उनमे प्रतिस्पर्धा का स्तर बनाएं रखने के लिए प्रवीणता छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गयी है।
- शासकीय विद्यालयों में गरीबी एवं आर्थिक विवशता से सम्बन्धित भी समस्याएं छात्रों के सामने मुख्य रूप से पायी गयी।
- शासकीय विद्यालयों में शिक्षकों का छात्रों की पर्याप्त सहयोग न मिल पाने की समस्या भी गम्भीर रूप से पायी गयी।
- अशासकीय विद्यालयों में छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था नहीं पायी गयी ।
- अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की समस्याओं में प्रमुख रूप से आवागमन की व्यवस्था, पाठ्यपुस्तकों एवं मध्यान्ह् भोजन की व्यवस्था का न होना पाया गया ।
- अशासकीय विद्यालयों में छात्रों की पाठ्य सहगामी क्रियाएं उनके व्यक्तित्व निर्माण हेतु शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अधिक पाए गये।
- अशासकीय विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षिकों की संख्या शासकीय

विद्यालयों की तुलना में अधिक पायी गयी ।

- शासकीय विद्यालयों के शिक्षिकों की शैक्षिणेत्तर दायित्व उनके अध्ययन कार्य से अधिक पाए गये ।
- शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की समस्याओं में प्रतिवर्ष पाठ्यक्रमों के बदलने एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उचित निर्देशन का अभाव प्रमुख है ।

**संदर्भ –**

1. डॉ. के. मेहता, शिक्षा का सर्वव्यापीकरण
2. डॉ. वी. के. भारती, प्राथमिक शिक्षा : समस्याएँ एवम् समाधान
3. डॉ. एच. आर. कपूर, शिक्षा का लोकव्यापीकरण
4. डॉ0 आर. के. शर्मा एवं डॉ. पी. एल. त्यागी, Primary Education ; The Basic Education